उपशास्त्री , शब्दभाषा हिन्दी, अ० द्वि० — पत्र

दिगंत - भाग - 2

शीर्षक - पद - 2

कवि - सूरदास

जेंवत स्याम नंद की कनियाँ।
कछुक खात, कछु धरनि गिरावत, छबि निरखति नँद-रनियाँ।
बरी-बरा बेसन, बहु भाँतिनि, व्यंजन बिविध, अँगनियाँ।
डारत, खात, लेत अपनैं कर, रुचि मानत दधि दोनियाँ।
— — — — — — — — — — — — — —
जो रस नंद-जसोदा बिलसत, सो नहिं तिहूँ भुवनियाँ।
भोजन करि नंद अचमन लीन्हौ, माँगत सूर जुठनियाँ॥

भावार्थ:- प्रस्तुत पद में महाकवि सूरदास श्रीकृष्ण के भोजन करने का वर्णन करते हैं। श्री कृष्ण को पिता नन्द गोद में बिठाकर खिला रहे हैं। श्रीकृष्ण कुछ खाते हैं कुछ धरती पर गिरा देते हैं। उनकी माता नन्दरानी यशोदा यह शोभा देखकर धन्य हो रही हैं। भोजन में अनगिनत प्रकार हैं। उसमें बेसन के बने बड़े विशेष महत्वपूर्ण हैं। वे खाते हैं, गिराते हैं और कभी-कभी अपने ही हाथों से खाने के लिए भोजन उठा लेते हैं। दोने में रखे दही के प्रति उनकी विशेष रुचि है। उसमें मिश्री तथा मक्खन मिलाकर वे अपने मुख में डालते हैं। कुछ दही मुँह में लगा रह जाता है जिससे उनकी शोभा और बढ़ जाती है। कवि को ऐसा लगता है कि मानो स्वयं सुन्दरता कृष्ण को पाकर धन्य हो गयी। बाल स्वभाव के अनुरूप कृष्ण न केवल स्वयं खाते हैं अपितु बाबा नन्द के मुँह में भी भोजन डाल देते हैं। इस दृश्य को देखकर नन्दजी बहुत प्रसन्न हो रहे हैं। इस तरह कवि कहना चाहता है कि क्रीड़ा करते हुए भोजन करने की जो भंगिमा कृष्ण की है उसके द्वारा जो आनन्द नन्द तथा यशोदा को प्राप्त हो रहा है वह तीनों लोक में किसी को भी प्राप्त नहीं है। भोजन समाप्त हो जाता है नन्द उठकर आचमन करा देते हैं। कवि इस दुर्लभ भोजन का अवशेष जूठन के रूप में माँगता है।

इस पद में बाल कृष्ण के भोजन करने का वर्णन है।

शेष आगे -

भोजन कर रहे हैं कृष्ण और आनन्द मिल रहा है नन्द-
और यशोदा को। माता-पिता के रूप में नन्द यशोदा तथा
वर्णन करने वाले के रूप में कवि सूरदास इस भोजन का
रस लेकर धन्य हो रहे हैं। इस पद में कवि ने वात्सल्य
रस का मनोरम चित्रांकन किया है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 05/11/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं०मह० वि० सुरवसेना, ब्रह्मियाँ।

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०हि०-पत्र

जयद्रथ-वध - काव्य खण्ड

कवि - श्री मैथिलीशरण गुप्त

Date: ______ Page: ______

उस ओर भूरिश्रवा से वीर सात्यकि लड़ रहा,
झंझानिल प्रेरित जलद ज्यों हो जलद से अड़ रहा।
बहु युद्ध करने से प्रथम ही था यदपि सात्यकि थका;
पर देख अर्जुन को निकट उत्साह से वह था छका॥

भावार्थ

प्रस्तुत पद के माध्यम से कवि ने सात्यकि और भूरिश्रवा के बीच हुए युद्ध का विस्तार से वर्णन किया है। कवि कहता है कि कौरवों की ओर से भूरिश्रवा सात्यकि से युद्ध करने लगा। उन दोनों का युद्ध ऐसा लग रहा था मानो आँधी या तूफानी वायु से प्रेरणा पाकर बादल-बादल से ही अड़ रहा हो। इसके साथ ही बहुत अधिक युद्ध करने से पूर्व ही सात्यकि थक गया था किन्तु वह अर्जुन को अपने समीप देखकर दुगने उत्साह से भर गया।

कवि ने प्रस्तुत पद्यांश में भूरिश्रवा और सात्यकि के बीच हुए भीषण युद्ध का वर्णन किया है। दोनों योद्धाओं के युद्ध कौशल को देखकर अन्य सारे वीर हतप्रभ हो गये। वे सभी वीर परस्पर लड़ना छोड़कर इन दोनों के युद्ध देखने लग जाते हैं। इस पद में वीर रस की धारा प्रवाहित हो रही है।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 04/12/20
रा०ऊ०सं० महावि० खुरखसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

'पथिक' खण्ड काव्य

कवि :- श्री रामनरेश त्रिपाठी

प्रश्न :- 'पथिक' काव्य में राजा के क्रोध और बुद्धिहीनता पर प्रकाश डालें।

उत्तर :- आधुनिककालीन हिन्दी साहित्य के चर्चित कवि श्री-राम नरेश त्रिपाठी ने अपने खण्ड काव्य 'पथिक' में राजा के क्रोध और बुद्धिहीनता पर विस्तार से प्रकाश डाला है। जब पथिक की हत्या राजा के आदेश से कर दी गयी तो पूरे देश में राजा के विरुद्ध असंतोष फैल गया। आम जन-मानस में क्रान्ति की चिनगारी सुलगने लगी। राजा को अपने अहंकार पर विश्वास था, इसी मद में मदमस्त होकर वह अन्धा बन चुका था। अच्छे-बुरे के भेदभाव से वह शून्य हो गया था। यह उसकी मूर्खता पूर्ण भावना थी कि वह पथिक के सारे स्मृति चिह्नों को मिटा देना चाहता था। जब पथिक की घर जलाने की बात आई तब प्रजा में सनसनी फैल गयी। अब ऐसी स्थिति हो गयी थी कि प्रजा विद्रोह प्रकट करे किन्तु इसमें थोड़ी देर थी। परन्तु राजा ने स्वयं प्रजा को विद्रोह करने के लिए विवश कर दिया।

राजा की आज्ञा में पथिक का नाम सुनकर प्रजा को कुछ राहत मिली क्योंकि उन्हें तो पथिक का नाम तक लेने की अनुमति नहीं थी। जैसे ही यह नाम लिया गया, प्रजा के मानस पटल पर पथिक के सम्बन्ध में सारी स्मृतियाँ पुनः उमड़ आई और वे सभी पुनः बिछोह के दुःख में डूब गये। किन्तु इतना तो निश्चित था कि इस नाम स्मरण से उन्हें संतोष प्राप्त हुआ।

पथिक की याद सजीव होते ही मन का आलस्य दूर हो गया। उनकी प्रसन्नता पुनः प्रकट हुई परन्तु एक लम्बे समय से रुका हुआ दुःख का वेग फूट पड़ा और राजा का अहंकार समाप्त हो गया।

डॉ० देव चरण प्रसाद 04/12/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० कु० सं० महाविद्यालय खसेना पूर्णियाँ